अध्याय : 6

स म न्वि त - मू ल्यां क न

अध्याय : 6

स म न्वि त - मू ल्यां क न

साहित्य और मानव का घनिष्ठ सम्बन्ध है, क्योंकि मानव ही साहित्य सृष्टा है। अतः उससे निर्मित कृति में उसके जीवन की विविध झाँकियाँ प्रस्तुत होना स्वाभाविक है। अखण्ड़ित मानव जीवन यात्रा में उसने विविध धारणाओं को जन्म दिया है और वे धारणाएँ जब समाज सम्मत हुई, तब मूल्य की संज्ञा प्राप्त कर चुकी हैं। अतः मूल्य का निर्माण कर्ता और मूल्य का संवाहक भी मानव ही है। इसीलिए साहित्य के केन्द्र में मानव रहता है और उसके जीवन का लेखा-जोखा जीवन-मूल्यों के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है। विशेषतया उपन्यास विधा एक ऐसी सशक्त गद्य विधा है, जिसमें मानव जीवन का बहुआयामी चित्रण यथार्थ रूप में प्रस्तुत करने की कोशिश की जाती है। इसी कारण जीवन-मूल्यों का परिवर्तन, संक्रमण, विघटन और नव-मूल्य निर्माण आदि मूल्यों के विविध पहलु परिलक्षित होते हैं।

मूल्य को अगर परिभाषा बद्ध किया जाय तो यह कहना पड़ेगा कि, मूल्य मानव निर्मित एक ऐसी अवधारणा है, जो समाज द्वारा स्वीकृत होने पर ही मूल्य बन जाती है, जिसमें मानव अस्तित्व और मानव जीवन निहित रहता है। परिस्थितिवश कुछ धारणाओं में परिवर्तन भी होता रहता है, क्योंकि परिवर्तन सृष्टि का महत्व पूर्ण सिद्धान्त है। सृष्टि के विविध क्षेत्रों में परिवर्तन परिलक्षित होता है, अतः मानव जीवन भी इससे से अछूता कैसे रह सकता है ? आज का मानव जीवन जटिलतम परिस्थितियों से गुजर रहा है। परिणामतः मानव जीवन-मूल्यों में विविधता और विभिन्नता आ गयी है। परम्परागत मूल्यों को ठुकराना और अपने मनोनुकूल आचरण करना यह प्रवृत्ति बन गई है, जिस की वजह से परम्परागत मूल्यों का

ढाँचा चरमराने लगा है, और परिवर्तित जीवन-मूल्यों की गति बढ़ने लगी है। आज के नारी-पुरूषों में अस्तित्व के प्रति सजगता विशेष रूप में दिखाई देती है, नारी भी अपने जीवन का पथ खुद बनाने में प्रयत्नरत है, उस में आत्मनिर्भर बनने की चाह दिखाई देती है, आज का पुरूष उसका शोषण करने पर तुला है। अतः वह ऐसे पुरूष को त्याग कर अपने परिवार का भरण-पोषण करती नज़र आती है। आज के स्त्री-पुरूष पारिवारिक मूल्यों को तोड़-मरोड रहे हैं। विवाहपूर्व प्रेमी या प्रेमिका के साथ अवैध यौन-सम्बन्ध रखते हैं और विवाहोत्तर भी परस्त्री के साथ अवैध यौन-सम्बन्ध राते हैं। अतः समाज की आधारशीला माने जाने वाले परिवार की नींव हिल रही है।

साठोत्तर हिन्दी उपन्यासों में मानव जीवन-मूल्य परिवर्तन की दृष्टि से हिन्दी में महिला उपन्यासकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, उदा॰मन्नू भंडारी कृष्णा सोबती, उषा प्रियम्वदा, शशिप्रभा शास्त्री, मृदुला गर्ग, चन्द्रकानता मृणाल पांडे, सुर्यबाला आदि। आठवें दशक के हिन्दी उपन्यासों में दीप्ति खण्डेलवाल के उपन्यासों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनके विवेच्य उपन्यासों में जीवन-मूल्य के परिवर्तन के बारे में मुख्यतया उन्होंने आधुनिक जीवन-संदर्भ में जीवन-मूल्यों के परिवर्तन में व्यक्तिवादी एवं अस्तित्वबोध परक परिवर्तित मूलयों को अपने उपन्यासों में सबसे अधिक स्थान दिया है। उनके विवेच्य तीनों उपन्यास नायिका प्रधान है उन्होंने नारी के परिवर्तित जीवन-मूल्यों को व्यापक रूप में और अनुषंगिक रूप में पुरूष पात्रों को भी चित्रित किया है। दीप्ति खण्डेलवाल ने अपने उपन्यासों में परिवर्तित नारी-पुरूष जीवन-मूल्यों को सक्षमता के साथ चित्रित किया है, जो लघु-शोध-कार्य का महत्वपूर्ण विषय बन गया है।

विवेच्य उपन्यासों के नारी-पुरूष अपने अस्तित्व के प्रति सजग है। परिवर्तित जीवन-मूल्यों में अस्तित्ववादी दर्शन अपना विशेष महत्व रखता है। आधुनिक जीवन संदर्भ में अस्तित्ववादी जीवन दर्शन वस्तुतः एक परिवर्तित जीवन-मूल्य हैं। विवेच्य उपन्यासों के कुछ नारी पात्रों में ईश्वरीय अस्तित्वबोध तथा अनिश्वरीय अस्तित्व बोध दोनों का भी चित्रण प्राप्त होता है। "कोहरे" उपन्यास की श्यामा अपने

जीवन की छटपटाहट, वेदना, संत्रास,कुण्ठा, व्यथा, घुटन को दमित करने के लिए ईश्वरीय अस्तित्व बोध काो जीवन में अपनाती है, तो "प्रिया" उपन्यास की सौदामिनी जीवन के थपेडों से आहत होकर अनिश्वरीय अस्तित्व बोध की ओर झूक जाती है। इसी उपन्यास का डा·मनसिज भी पाश्चात्य विचारों से प्रभावित होने के कारण धर्म, ईश्वर आदि को नकारता है, और मोमेन्टस की फिलॉसोफी को अपनाता है। उपर्युक्त दोनों बोध उपनयास में चित्रित पात्रों के क्रिया-कलाप और धारणाओं से स्पष्ट हुए हैं। उपन्यासों में चित्रित कुछ पात्र ऐसे हैं, जो अपने वैयक्तिक अस्तित्व को बनाए रखने के लिए संघर्षरत हैं, तो कुछ पात्र कानुन का सहारा लेकर परम्परागत बन्धन तोड़ते नज़र आते हैं। विवेच्य उपन्यासों में यह भी नज़र आता है कि, आज की नारी स्वतंत्रता पूर्वक चयन करती है और उसी के अनुसार जीवन जीने की कोशिश करती है, आज के नारी-पुरूष के अंतस में भीतर ही भीतर संघर्ष चलता ळै और उन्हें घुटन सहनी पडती है। आज के नारी-पुरूषों के जीवन में संत्रास, व्यथा, कुंठा, निराशा आदि को बोध परिलक्षित होता है और तद्उपरान्त भी वे अस्तित्व के लिए छटपटाते नजर आते हैं। विवेच्य उपन्यासों में मानवीय सम्बन्धों में अलगाव नजर आता है, जो पाश्चात्य विचारधारा का द्योतक है। लेकिन कुछ पात्र ऐसे भी हैं, जो भारतीय परिवेश में भी अलगाव बोध महसूस करते हैं, अलगाव बोध पारिवारिक जीवन से सम्बन्धित है। इस अलगाव में पति-पत्नी सम्बन्धों में अलगाव माता-पिता से अलगाव पिता-पुत्री में अलगाव और माता-पुत्री में अलगाव दृष्टिगोचर होता है। "प्रतिध्वनियाँ" उपन्यास की अचला और नीलकान्त "कोहरे" उपन्यास का निशीथ और "प्रतिध्वनियाँ" उपन्यास की रागिनी और नीलकान्त आदि पात्र इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। आज के नारी तथा पुरूषों का जीवन अकेलेपन से घिर गया है, भीड़ भरे शहरों में रहकर भी उन्हें अकेलापन कचोटता है। "प्रतिध्वनियाँ" उपन्यास का नीलकान्त इसका सशक्त उदाहरण है। आज के नारी-पुरूष क्षणबोध के प्रति, सचेत है और जीवन के प्रत्येक क्षण को सार्थक बनाने की कोशिश करते हैं। "प्रिया" उपन्यास का डा·मनसिज और "प्रतिध्वनियाँ" उपन्यास की मोतीबाई सशक्त उदाहरण हैं।

विवेच्य उपन्यासों में पुरूष और नारी पात्रों के अस्तित्व बोध को भारतीय परिवेश और चिन्तन के परिप्रेक्ष्य में अभिव्यंजित किया गया है।

आधुनिक नारी-पुरूष अपनी जिन्दगी के प्रति अधिक सतर्क और सजग होने के कारण वे पारिवारिक जीवन-मूल्यों के प्रति भी परिवर्तित दृष्टि रखकर जीवन यापन कर रहे हैं। आज परिवार वालों की उपेक्षा करना यह पारिवारिक सदस्यों की प्रवृत्ति बन गई है। अतः परिवार से छिप कर वे नर-नारियाँ विवाहपूर्व ही प्रेम और यौन-सम्बन्ध रखते हैं। कुछ पात्र केवल प्रेम-सम्बन्ध रखते हैं, तो कुछ पात्र प्रेम और यौन-सम्बन्ध रखे हैं। कभी-कभी परिस्थितिवश विवाहपूर्व प्रेमी से उनका विवाह नहीं हो पाता, तो वे पात्र विवाहोपरान्त भी विवाहपूर्व-प्रेमी-प्रेमिका के साथ अपने सम्बन्ध सम्बन्ध बनाए रखते हैं। विवाह के बाद भी कुछ नारी-पुरूष पात्र परपुरूष या परनारी की ओर आकर्षित होते हैं और परिवार वालों की समाज की परवाह न करते हुए वे अपने सम्बन्ध बनाए राते हैं। कभी-कभी कुछ नारियाँ अर्थ के लिए अन्य पुरूषों से यौन-सम्बन्ध रखती हैं, तो कभी-कभी अर्थ अभाव के कारण अनमेल विवाह भी करती है। अतः विवाह के प्रति नये दृष्टिकोन भी विवेच्य उपन्यासों में परिलक्षित होते हैं। कुछ पुरूष पात्र संसार की नजरों में ऊँचा उठने के लिए गरीब तथा अनाथ लड़की के साथ द्वितीय विवाह कर लेते हैं। "प्रिया" उपन्यास के नेता यशवंत इसी दृष्टिकोन से विवाह करते हैं। आर्थिक दृष्टिकोन ध्यान में रखकर भी विवाह तय करने की प्रवृत्ति उपन्यास में दिखायी देती है। नारी का उपयोग अर्थ लाभ के लिए किया जाता है और राजनीतिक लाभ के लिए भी। राजनीतिकता में यश प्राप्ति के लिए प्रतिद्वंदी के पुत्र के साथ विवाह तय करने की प्रवृत्ति भी नजर आती है।

पारिवारिक जीवन क्षेत्र की ओर लेखिका विशेष आकृष्ट दिखाई देती है। क्योंकि विवेच्य उपन्यासों में पारिवारिक जीवन के प्रति अधिक सजगता नजर आती है। विवेच्य उपन्यासों के अंतर्गत दो उपन्यासों में "प्रिया", "प्रतिध्वनियाँ" राजनीतिक, परिवर्तित जीवन-मूल्यों को चित्रित किया गया है। राजनीतिक नेता , देश-सेवा, जनसेवा के स्थान पर वैयक्तिक स्वार्थ सिद्धि और सुखोपभोग के लिए सत्ता प्राप्त

करना चाहते हैं, उनमें भ्रष्टाचार, गुंड़ागर्दी नारी-शोषण और परिवार का शोषण आदि, कुप्रवृत्तियाँ दिखाई देती हैं। ये लोग हिंसा की प्रवृत्ति पर उतर आते हैं, इस ओर लेखिका ने ध्यान आकर्षित करना चाहा है। सांस्कृतिक जीवन मूल्यों में भी विशेष परिवर्तन दिखाई देता है, वे भारतीय संस्कृति की अपेक्षा पाश्चात्य संस्कृति और पाश्चात्य विचारधाराएँ अपनाते नज़र आते हैं। पाश्चात्य रहन-सहन, खान-पान और रीति-रिवाजों को अपनाना इन पात्रों को उचित लगता है। क्लब में जाना, शराब पीना, बेहोश होकर नाचना आदि प्रवृत्ति उन में प्रबलतम रूप में दिखाई देती है। "कोहरे" उपन्यास के मेजर सिन्हा और निशीथ इसके उल्लेखनीय पात्र हैं। धार्मिक जीवन-मूल्यों में भी नये प्रतिमानों के दर्शन होते हैं। "प्रिया" उपन्यास का डॉ॰मनसिज, "कोहरे" उपन्यास के मेजर सिन्हा आदि पात्रों के जीवन में पाश्चात्य प्रभाव की अधिकता से धर्म के प्रति अनास्था दिखाई देती है। पारिवारिक नैतिकता के धरातल पर नये-नये प्रतिमानों में उभर आये हैं। त्रिकोणमिती जीवन, अनमेल विवाह, माता-पिता और पुत्रों के बीच की स्नेह-हीनता, मातृत्व नव्य-बोध आदि, अनेक प्रतिमान परिलक्षित होते हैं।

दीप्ति खण्डेलवाल ने परिवर्तित नारी जीवन-मूल्यों का जो प्रतिबिम्ब अपने उपन्यासों में चित्रित किया है, उसमें लेखिका के अभिव्यक्ति के आयामों को भी नजर अंदाज नहीं किये जा सकता। लेखिका ने अपने उपन्यासों में युगसंदर्भ के अनुसार पात्र और चरित्र-चित्रण, भाषाशैली, संवाद शैली, मनोवैज्ञानिक शैली, आदि शैलियों को इस तरह अपनाया है कि जीवन-मूल्यों का परिवर्तन हूबहू दृष्टिगोचर होता है।

विवेच्य उपन्यासों का अनुशलीन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि लेखिका ने नारी पात्रों को केंद्र में रखकर उनकी जीवन की यंत्रणाएँ तथा संत्रासावस्था स्पष्ट की है। नारी चाहे धनवान हो या निर्धन वह पुरुष द्वारा किसी ना किसी रूप में छली जाती है। परिणामतः उसके जीवन-मूल्यों में परिवर्तन होता है। "प्रिया उपन्यास में तो लेखिका मानो नारी संघटन का नेतृत्व करने पर उतर आयी है, वास्तव में लेखिका की यह मनोवस्था स्वाभाविक लगती है। सदियों से छली जाने

वाली नारी जाति के प्रति लेखिका ने हमदर्दी दिखायी है।

समग्रतः यह कहा जा सकता है कि आठवें दशक के महिला उपन्यासों में परिवर्तित जीवन-मूल्यों के बारे में दीप्ति खण्डेलवाल के उपन्यास वर्तमान जीवन यापन से मेल खाते हैं। लेखिका की दृष्टि अत्यन्त पैनी और तीक्ष्ण है। लेखिका ने नारी सुलभ स्वभाव के अनुसार अपने उपन्यासों में नारी पात्रों को ही मूल्य परिवर्तन का केन्द्रबिन्दु माना है। नारी की व्यथा दुख-दर्द टीस उनके व्यक्तित्व की पहचान कराने में लेखिका पूरी तरह से कामयाब हुई है। साधारणतया व्यक्तिवाद एवं अस्तित्व बोध और पारिवारिक मूल्य विघटन को ही व्यापक रूप में लेखिका ने चित्रित किया है। आधुनिक युग के नारी पुरूषों को परिलक्षित करते हुए उनका व्यक्तित्व उनका जीवन दर्शन, उनका मनोविज्ञान आदि को लरिलक्षित करते हुए विविध शैलियों का जो प्रयोग किया है वह परिवर्तित जीवन-मूल्यों को उजागर करने में सहायक सिद्व हुआ है। दो उपन्यासों में (''प्रिया'',''प्रतिध्वनियाँ'') राजनीतिक नेताओं के परिवर्तित जीवन-मूल्यों का विवेचन प्राप्त होता है, तो एक उपन्यास (कोहरे) में प्रोफेसर जैसे समाज के श्रेष्ठ स्तर के व्यक्ति का जीवन-मूल्यों के प्रति परिवर्तित दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होता है। लेखिका ने नारी और पुरूष पात्रों के जीवन-मूल्यों में कितना परिवर्तन हो रहा है, यह तो स्पष्ट किया ही है, पर साथ ही साथ समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त नेता और प्राध्यापकों में भी जीवन-मूल्यों का विघटन कर रहे हैं और समाज में नये-नये मूल्यों को विकसित कर रहे हैं, यह भी स्पष्ट किया है। जिस वर्ग द्वारा समाज सुधार की अपेक्षा रखी जाती है वही वर्ग आज समाज में अनैतिकता, भ्रष्टाचार और स्वच्छन्द काम भावना को बढ़ावा दे रहा है, इस बात की ओर संकेत करने की कोशिश लेखिका ने की है, यह स्पष्टतया नज़र आता है।